

## मेरी पांच कविताएं

### 1) हर रोज

हर रोज एक घाव रिसता है।  
हर रोज एक दर्द होता है।  
हर रोज आत्मा रोती है।  
हर रोज समंदर बहता है।  
हर रोज ये समस्या होती है।  
हर रोज ये दुखड़ा होता है।  
हर रोज कोई ना कोई किसी का  
किसी से बिछड़ा होता है।  
हर रोज दीवारे गिरती है।  
हर रोज कोई ना कोई दबता है।  
हर रोज बिजलियाँ गिरती है।  
हर रोज खून जलता है।  
हर रोज जब मैं जगता हूँ  
हर रोज ही ऐसा दिखता है।  
हर रोज ही ऐसा होता है।  
हर रोज ही ऐसा होता है।

हर रोज कयामत होती है  
हर रोज शहादत होती है  
हर रोज सलामती खातिर  
हर रोज इबादत होती है

हर रोज जब मैं घर से निकलता हूँ  
हर रोज ही एक भय होता है  
हर रोज मुझे,फिर वापस आने का  
मन में संशय होता है

हर रोज एक घाव रिसता है।  
हर रोज एक दर्द होता है।  
हर रोज आत्मा रोती है।  
हर रोज समंदर बहता है।

---

## 2) जमीर

पल पल में बिकते है जमीर यहाँ

जिनके नहीं बिके वो फ़क़ीर यहां

रूह भी बिकती है,

बदन भी,

बिकता है।

अपने वतन की छोड़ो,

अपना कफ़न भी बिकता है।

पैसों में बदल जाती है लकीर यहां।

पल पल में बिकते है जमीर यहाँ

जिनके नहीं बिके वो फ़क़ीर यहां

इंसान भी बिकता है

और इंसानियत भी

नीयत पर विश्वास नहीं

अब किसी की तनिक भी ।

बड़ा ही मुश्किल है संभालना खुद को

हर तरफ से आते है तीखे तीर यहां

पल पल में बिकते है जमीर यहाँ  
जिनके नहीं बिके वो फ़कीर यहाँ

दुनिया अब सिर्फ़ कामचलाऊ है  
जिसका खरीदना है खरीदो  
सबके ईमान बिकाऊ है  
मर जाए जो ईमान पर  
बचे ऐसे वीर कहाँ

पल पल में बिकते है जमीर यहाँ  
जिनके नहीं बिके वो फ़कीर यहाँ

---

### 3) सत्य की चोट

मेरी हर बात पर नाराज क्यों होते है वो,  
क्या मैं कुछ गलत कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।

या तो आदत नहीं है सुनने की उनको  
या फिर मैं सच कहता हूँ

वो तो भ्रम में ही रहना चाहते हैं  
वो तो मीठा ही सुनना चाहते हैं  
सच्ची बात बुरी लगती है उनको  
सत्य से ठेस पहुँचती है उनको

पर मैं ही नहीं समझता हूँ  
बार बार यही पूछता हूँ

कि मेरी हर बात पर नाराज क्यों होते हैं वो,  
क्या मैं कुछ गलत कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।

सूरज की रौशनी की तरह होती है सच्चाई,  
जो झूठ का अंधेरा हटाती है,  
पर उनको वो धुप की तरह चुभती है।

उनके नाजायज़ हकों पर थोड़ा सा मैं मुस्कुरा दूँ,  
तो उनके हाथों की नसें दुखती हैं।

वैसे मैंने कभी उनकी दुखती नसों को नहीं छेड़ा  
मैं तो बस ऐसे ही मजे लेता हूँ।

मेरी हर बात पर नाराज क्यों होते हैं वो,  
क्या मैं कुछ गलत कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
या तो आदत नहीं है सुनने की उनको  
या फिर मैं सच कहता हूँ

उनके झूठे जमीर पर कोई सवाल उठाये  
उन्हें अच्छा नहीं लगता  
उनकी आँखों के आगे से कोई पर्दा हटाए  
उन्हें अच्छा नहीं लगता

ये सब मैं जानता हूँ,

पर मैं नहीं समझता हूँ।  
बार बार एक ही बात बार बार पूछता हूँ।

कि मेरी हर बात पर नाराज क्यों होते है वो,  
क्या मैं कुछ गलत कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
ऐसा मैं क्या कहता हूँ।  
या तो आदत नहीं है सुनने की उनको  
या फिर मैं सच कहता हूँ

---

#### 4) गर्मियों के दिन

ये दिन है,गर्मियों के।  
नकाब है,चेहरों पर,हिरणियों के  
सूखे है किनारे नदियों के  
आँचल है खाली बदलियों के  
रिकार्ड टूटे हे कई सदियों के

ये दिन है, गर्मियों के।  
ये दिन है, गर्मियों के।

आग ही आग है बाहर चारो तरफ  
बन्द दरवाजे है गलियों के  
कुम्हला गयी है डालियां  
बुरे हाल है कलियों के  
ये दिन है, गर्मियों के।  
ये दिन है, गर्मियों के।

प्राणी पानी को रो रहे  
लोग पसीनों से तर बतर हो रहे  
कांटे खिसक नहीं रहे घड़ियों के  
पर झुलस गए चिड़ियों के  
ये दिन है, गर्मियों के।  
ये दिन है, गर्मियों के।

---

5) इनफ इज इनफ



आग लगेगी चारों तरफ  
कहर उठेगा चारों तरफ  
अब नहीं रूकूंगी मै  
कहीं नहीं झूकूंगी मै  
बस बहुत हो गया  
इनफ इज इनफ  
बस बहुत हो गया  
इनफ इज इनफ

बेड़ियाँ अब नहीं बंधेगी  
भेड़िए अब नहीं बचेंगे  
बेटियां अब आगे बढ़ेगी  
बेटियां अब कांधे भी देंगी  
बेटियां अब नहीं सहेंगी  
बेटियां अब बैटल करेगी  
आवाज उठेगी चारों तरफ  
कहर उठेगा चारों तरफ  
अब नहीं रूकूंगी मैं

कहीं नहीं झूकूंगी मैं

बस बहुत हो गया

इनफ इज इनफ

बस बहुत हो गया

इनफ इज इनफ

मुझ पर ना चिल्लाओ तुम

हाथ नहीं उठाओ तुम

मैं दुर्गा बन जाऊंगी

मैं इन्दिरा बन जाऊंगी

आदत अपनी दूर करो

मुझको ना मजबूर करो

अब कोई भी जोर नहीं

बर्दाश्त अब और नहीं

अब तिल तिल कर मरना नहीं

पैरों तले अब गिरना नहीं

कोई अग्नि परीक्षा नहीं

मर्दों मर्यादाओं से डरना नहीं

बन्द दरवाजे तोड़ूंगी  
लाज का घूँघट छोड़ूंगी  
आग लगेगी चारों तरफ  
कहर उठेगा चारों तरफ  
अब नहीं रूकूंगी मैं  
कहीं नहीं झूकूंगी मैं  
बस बहुत हो गया  
इनफ इज इनफ

---

धन्यवाद